प्रकृति विज्ञान

सत्य का नहीं। मल जिसे आप बेकार समझ कर फेंक देते हैं उस पर भी सत्य प्रकाश पड़ता है तो असत्य जलकर सत्य बनता है जिससे प्रकृति को विशेष प्रकार की उर्जा मिलती है। प्रकृति का निर्माण किसी के निर्देश से नहीं बल्कि अपनी स्वाभाविक गति से होता हैं यदि किसी के निर्देश से प्रकृति संचालित होती है तो क्यों नहीं वे प्रकृति को अनांदित कर देता? क्या दूसरे का दुःख ही उसका आनन्द है? यह मानव समाज का भ्रम हैं किसी के निर्देश से नहीं स्वाभविक गति से प्रकृति कार्य कर रही हैं यही सत्य है। पूरी सृष्टि कोई खेल नहीं एक विज्ञान है, इसी विज्ञान को जानने की जरूरत है। सत्य कोई रहस्य नहीं जिसे छिपाया जा सकता हैं सत्य को प्रकाशमान है जिसे हर व्यक्ति देख सकता है। पूरा ब्रह्माण्ड गोला है, कोई जगह खाली नहीं, हर जगह कुछ न कुछ है। सिर्फ सूर्यदेव ही वह शून्य है जहाँ सिर्फ सत्य प्रकाश है जो हर जगह फैलता है। वही सत्य प्रकश जल के सहयोग से प्रकृति का निर्माण करता हैं प्रकृति के जीव प्राणी अपने ढंग से सत्य की व्याख्या करते हैं। लेकिन जो वास्तविक सत्य है वह यही है।

मानव समाज कुछ सत्य की परिभाषा अपने जीवन में सत्य मानता हैं उसी सत्य पर उसे अपने आप में विचार कर लेना चाहिए। सबका सोचने का विषय अलग होता है इसलिए वह अपने आप में खोजे क्योंकि प्रकृति का प्रकाश जो दूसरे को मिल रहा है वही उसे भी मिल रहा है। पर कुछ विषय स्वाभाविक सोच के हैं जिसे मैं सोंच रहा हूँ। जब अन्यायी व्यक्ति ईश्वर के हाथ मरने से मोक्ष पा सकता है उसे स्वर्ग मिल जाता है तो क्यों नहीं सभी एक साथ अन्यायी होकर मोक्ष प्रापत कर लेते क्योंकि सभी का उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना ही तो है और पिफर मोक्ष के लिए नरसंहार हुआ तो फिर इतनी जनसंख्या कहाँ से हो गयी। इसी के साथ सभी को एक साथ मोक्ष प्राप्त करने का एक साधन और है हर व्यक्ति यह निश्चय कर ले कि हम शारीरिक सम्पर्क के समय ऐसा बचाव रखेगें जिससे बच्चा न पैदा हो तो 100 साल बाद या एक निश्चित समय के बाद सबको एक साथ मोक्ष मिल जाएगा। यह श्रम है, प्रकृति स्वंय चलायमान है, उसका नियंत्रण किसी एक के हाथ में नहीं है। सी मोक्ष वह है जो यहीं रहते हुए सत्य को पहचान लं और प्रकृति में 'समभाव' से मिल जाये फिर प्रकृति में उस शरीर से जो शुद्ध भावना छोड़ी जाती है, वह कभी नष्ट नहीं होती है और जो उसके मरने के बाद भी उस विचार के व्यक्ति के साथ मिलकर सत्य करता है, यही 'मोक्ष' है। माया जिसे हर व्यक्ति मोक्ष के लिए बन्धन मानता है,

वही माया हर व्यक्ति के लिए आवश्यक होती है, बचना है ताक माया की संकीर्णता से बचिए, माया से बचने की जरूरत नहीं है। आवश्यकता बुराई नहीं होती है, यदि माया न हो तो जीवन कैसा लगेगा, इसे आप खुद ही सांचिए। माया वह नहीं है जिसमें सिर्फ अपना है, माया वह है जिसमें सबग कुछ अपना है, इसलिए कि जिसके तुम हो उसका सब है। इसलिए माया हर बच्चे, हर इंसान व सत्य प्रक1ति के लिए पैदा कीजिए। बन्धन जिसे व्यक्ति कहता है कि मोछ के लिए सबसे बड़ी बुराई है और यह पूर्ण सत्य है कि पूरी प्रक1ति एक स्वाभाविक बन्धन से चल रही है जिसका नियंत्रण यही बंधन है कोई व्यक्ति नहीं। जब यह बंधन प्रकृति को चला रहा है तो मानव समाज को चलाने के लिए यह आवश्यक क्यों नही है? यह बंधन सभ की आवश्यकता है पर इस बंधन की वास्तविकता समझना आवश्यक हैं यह हर व्यक्ति जानता है कि यदि वह किसी बंधन से बंधाहै तभी उसका कोई अर्थ हैं प्रकृति का अीं है इसलिए मानव समाज का भी अीं है। इसलिए इस अर्थ को पहचानने की जरूरत हैं इससे दूर भागने की जरूरत नही है। सत्य प्रकृति को पहचान कर उस बंधन में बंधकर कार्य करना भी एक बंधन हैं मानव समाज पता नहीं क्या पाने कलिए आवश्यकता को ही सत्य की बुराई मानता है। मानव समाज को आवश्यकता को बुराई न समझने जैसे भाव से मुक्त होना चाहिए और सत्य को पहचान कर प्रकृति में धूम रहे सत्य के बारे में जानिए और उनके अन्दर से कुछ खोजिए। 'उल्लू' जिसे मानव समाज सबसे खराब व्यक्ति के लिए प्रयोग करता है पर उल्लू समाज के लिए एक चुनौती है जो रात में देख्कर दिखाता है जिसे मानव समाज बिना प्रकाश के सहयोग से अभी तक नहीं कर पाया है।

आत्मा सूर्य की वह संरचना है जिसे जल का गैसीय भाग रोकता है, इसके चारो तरफ मन को रोकने के लिए चुम्बकीय गुण क्रियाशील होता है। मन इच्छाशक्ति को जन्म देता है। यदि इसे एक बिन्दु पर रोकने का अभ्यास किया जाता है तो इसी प्रकार का एक प्रकाश प्रकृति में उसके लिए बन जाताहै जिसे वह हमेशा देख सकता है, वही प्रकाश उसका सच्चा मित्र होता है, इसकी क्षमता इच्छाशक्ति से भूत, भविष्य, वर्तमान अर्थात् सब कुछ जानने की होती है। इसका प्रयोग हर व्यक्ति कर सकता ह। आप किसी प्रश्न की जानकारी के लिए मन को रोक दीजिए, 5 मिनट बाद जो जवाब मिलेगा वही सतय होगा।''

www.suryaashram.com